University in News on 06 October 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 7

लविवि : फार्मेसी में पहली बार विदेशी छात्रों ने किए आवेदन

सूडान, तजाकिस्तान और बांग्लादेश के विद्यार्थियों ने लिया प्रवेश

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में फार्मेसी की पढ़ाई विदेशी विद्यार्थियों के मन को भा रही है। यहां पहली बार सूडान, तजाकिस्तान और बांग्लादेश से विद्यार्थी बीफार्मा की पढ़ाई के लिए पहुंचे हैं। तीनों देशों से एक-एक छात्र ने फार्मा के तीन वर्षीय बैचलर कोर्स में प्रवेश लिया है।

लविवि में सत्र 2021-22 में फार्मेसी संकाय की स्थापना की गई थी। इसके अंतर्गत विभाग में बीफार्मा (बैचलर ऑफ फार्मेसी) और डिप्लोमा इन फार्मेसी (डीफार्मा) की पढ़ाई शुरू की गई। बीते सत्र तक विश्वविद्यालय इन कोर्स में एकेटीयू के माध्यम से प्रवेश लेता था। लेकिन इस बार में प्रवेश में देरी के चलते विश्वविद्यालय ने अपने स्तर से प्रवेश लिए हैं।

बीफार्मा की सभी सौ सीटों पर सीयूईटी यूजी की काउंसिलिंग के माध्यम से आवेदन मांगे गए थे जो काउंसिलिंग के दिन ही भर गई थीं। इसके साथ ही ईडब्ल्यूएस की भी 10 सीटों पर प्रवेश लिए गए हैं। डीफार्मा की 60 सीटों पर विवि ने प्रवेश परीक्षा के माध्यम से दाखिले लिए हैं।

काउंसिलिंग से बीफार्मा की सभी सौ सीटों पर हो गए प्रवेश

लखनऊ विवि का फार्मेसी संकाय। संवाद

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा है हमारी पहचान

लविवि अपनी क्षमता और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के दम पर विश्व में अपनी छाप छोड़ रहा है। इसी की देन है कि विदेशी विद्यार्थी पढ़ाई के लिए यहां रुख कर रहे हैं। हमारा पूरा प्रयास है कि वे जिस उद्देश्य से लविवि आएं, वह पूर्ण हो। - प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव, प्रवक्ता लविवि

रोजगार के अधिक अवसर कर रहे आकर्षित

कोरोना महामारी के बाद चिकित्सा के क्षेत्र में अवसर बढ़े हैं। सरकार की ओर से चिकित्सा सेवा को बेहतर करने के लिए हर जिले में मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। इससे पहले के मुकाबले अधिक संख्या में डॉक्टर तैयार होंगे तो वहीं फार्मासिस्ट की जरूरत भी बढ़ रही है। यह फार्मा के विद्यार्थियों को रोजगार दिलाने में सहायक होगी।

आईसीएसएसआर के माध्यम से हुए दाखिले

बीफार्मा में प्रवेश के लिए तीनों देशों के विद्यार्थियों ने भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के माध्यम से आवेदन किया था। संस्था भारत में अनुसंधान और शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थियों को परियोजनाओं, फेलोशिप, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सेमिनार, क्षमता निर्माण के लिए अनुदान देती है।

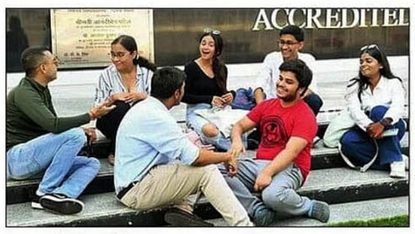

पढ़ाई के बीच फुरसत के पल

अमर उजाला

लखनऊ विश्वविद्यालय के अलग-अलग विभागों में इन दिनों कक्षाएं शुरू हो चुकी हैं और छात्र-छात्राओं की अच्छी खासी संख्या परिसर में देखने को मिल रही हैं। इस दौरान कभी किसी कारणवश अगर कक्षाएं नहीं होती हैं तो विद्यार्थी कुछ पलों के लिए एक-दूसरे के साथ हंसी-मजाक कर खुद को हल्का महसूस करते हैं। शनिवार को कुछ इसी अंदाज में आपस में बातचीत करते विद्यार्थी।

दलित साहित्य का अहम योगदान

लखनऊ। भारतीयता के निर्माण में दलित साहित्य का अपना योगदान है। वह एकता में अनेकता के भाव को मजबूत कर रहा है। दलित आंदोलन प्रश्नाकुल धारा है, जो सवालों के साथ आगे बढ़ती रही है। ये बातें दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी ने कहीं। वह शनिवार को लखनऊ विवि के हिंदी व आधुनिक भाषा विभाग की ओर से आयोजित व्याख्यान में कही। उन्होंने कहा कि हिंदी पट्टी के विद्यार्थियों को कम से कम अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू भाषा जरूर सीखनी चाहिए। प्रो. श्रुति, प्रो. पवन अग्रवाल, प्रो. वाईपी सिंह, डॉ. आकांक्षा मौजूद रहे। (संवाद)

AMRIT VICHAR PAGE 4

हिंदी वालों को संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू भी सीखना चाहिए

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यवक्ता देशबन्धु कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बजरंग बिहारी तिवारी रहे। उन्होंने कहा कि दलित आंदोलन वह प्रश्नाकुल धारा है, जो सवालों के साथ आगे बढ़ी है।

शुद्धाद्वैतवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी वालों को संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू भाषा अनिवार्य रूप से सीखना चाहिए। इसके बगैर आप किसी अच्छे शोध में आगे नहीं बढ़ सकते। प्रश्नकाल में वक्तव्य के दौरान छात्रों और शोधार्थियों के सवालों का जवाब दिए गए।

प्रो. पवन अग्रवाल की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में डॉ. रविकांत, प्रो.वाई.पी सिंह, डॉ. आकांक्षा, डॉ. ममता तिवारी और डॉ. सुधा के साथ साथ बीए, एमए के छात्र व छात्राएं और शोधार्थी भी उपस्थित रहे। संचालन प्रो. श्रुति ने किया।

कार्यशाला के बाद हिंदी विभाग के बाहर खड़े प्रतिभागी। अमृत विचार

पोक्सो अधिनियम- 2012 पर कार्यशाला आयोजित

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय के प्रो बोनो क्लब की ओर से सीएमएस में पोक्सो अधिनियम-2012 पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। विधि संकाय के विभागाध्यक्ष और डीन डॉ. बीडी सिंह ने कहा कि समय-समय पर ऐसे आयोजन किए जाते हैं।

कार्यक्रम के दौरान प्रो बोनो क्लब के सदस्य कशिश, कोमल, अमन, सार्थक और पार्थ ने पोक्सो अधिनियम के विभिन्न कानूनी और संवैधानिक पहलुओं पर चर्चा की। संकाय समन्वयक डॉ. आलोक कुमार यादव ने मार्गदर्शन और डॉ सुधीर वर्मा ने संचालन किया। सुमित सिंह और वंशिका गौड़ भी उपस्थित रहे।

दर्शनशास्त्र में आत्मविद्या पर व्याख्यान सम्पन्न

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में सैटरडे सेमिनार की श्रृंखला में विभागाध्यक्षा डॉ रजनी श्रीवास्तव के संरक्षण में व्याख्यान का आयोजन किया गया। शोध छात्र विवेक मिश्र ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। व्याख्यान के पाश्चात्य विभाग की प्राचार्य डॉक्टर रजनी श्रीवास्तव ने उनके व्याख्यान को संक्षिप्त करते हुए टिप्पणी दी। सेमिनार में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रोफ़ेसर राकेश चंद्रा, डॉ राजेश्वर प्रसाद यादव, डॉ राजेंद्र कुमार वर्मा व डॉ ममता सिंह उपस्थित थे। सेमिनार के कोऑर्डिनेटर विभाग की शोध छात्रा निशी कुमारी रही।

LOKSATYA PAGE 2

एलयू दर्शनशास्त्र विभाग में हुआ सैटरडे सेमिनार

विभाग के शोध छात्र विवेक मिश्र ने अपना व्याख्यान दिया

लखनऊ, लोकसत्य। लखनऊ विश्वविधालय के दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से सैटरडे सेमिनार की विशेष श्रृंखला में विभागाध्यक्षा डॉ रजनी श्रीवास्तव के संरक्षण में एक व्याख्यान हुआ। व्याख्यान में दर्शनशास्त्र विभाग के शोध छात्र विवेक मिश्र ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । उनके द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान का विषय Darshan: From Anvikshiki to Atmavidya₹ था। उन्होंने अपने व्याख्यान का प्रारंभ इस बात से किया कि कैसे पाश्चात्य दर्शन ने भारतीय दर्शन के विचारों लेकर खुद का विकास भारतीय से भी अधिक किया। उन्होंने भारतीय दर्शन में एवं पाश्चात्य दर्शन में कैसे दर्शन को परिभाषित किया है, उसकी भी चर्चा की। भारतीय दर्शन में दृश्यते अनेन इति दर्शनम तथा

पाश्चात्य दर्शन में जानने की इच्छा के रूप में कैसे परिभाषित किया जाता है, इसकी भी चर्चा की। भारतीय परम्परा में कैसे कौटिल्य के अर्थ शास्त्र को दर्शन के परिपेक्ष में देख सकते हैं, उसकी चर्चा की। भारतीय परम्परा में आन्विक्षिकी को एवं भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदाय कैसे इसकी चर्चा करते हैं , इसका भी वर्णन किया। भारतीय में पाश्चात्य विचारक आन्विक्षिकी को किस किस रूप में परिभाषित करते हैं, इसकी चर्चा के साथ साथ भारतीय दर्शन को भारतीय परंपरा के समकालीन विचारकों ने कैसे नई दृष्टि में वर्णित किया है उनकी चर्चा के साथ साथ राधा कृष्णन, दया कृष्ण एवं एस एन दास गुप्ता जैसे विचारकों का उल्लेख किया । उनके व्याख्यान के पाश्चात्य विभाग की प्राचार्य डॉक्टर रजनी श्रीवास्तव ने उनके व्याख्यान को संछिप्त करते हुए अपनी टिप्पणियों को व्यक्त किया। सेमिनार में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रोफ़ेसर राकेश चंद्रा, , डॉ0 राजेश्वर प्रसाद यादव, डॉ0 राजेंद्र कुमार वर्मा एवं डॉ0 ममता सिंह उपस्थित थे। सेमिनार के कोऑर्डिनेटर विभाग की शोध छात्रा निशी कुमारी रही। सेमिनार के सफलता पूर्वक समापन में विभाग के अन्य शोध छात्रों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

TOI PAGE 3

In a first, LU to rank its 556 affiliated colleges soon

Mohita.Tewari
@timesofindia.com

Lucknow: In a first, Lucknow University will soon award ranks to its 556 affiliated colleges across Lucknow, Rae Bareli, Hardoi, Sitapur, and Lakhimpur Kheri. The university had previously announced plans to revive departmental rankings from the 2024-25 academic session, based on academic and curricular achievements.

According to LU officials, ranking colleges will help candidates seeking undergraduate and postgraduate admissions choose colleges according to their rank if they fail to secure a spot on LU's merit list. The modalities, including whether colleges will be ranked course-wise or overall and the evaluation parameters, will be decided shortly.

"Rankings enable students to compare institutions and select the best fit for their academic and career goals," said Dean of Academics, Geetanjali Mishra, adding that the ranking would provide a snapshot of an institution's quality of education, faculty, research opportunities, reputation, and prestige. She said rankings could be based on a variety of factors, including teaching, research, reputation, industry-focused research, collaborative efforts, academic reputation, faculty credentials, student-to-faculty ratio, campus facilities, and alumni success. The modalities, or rule book of how LU colleges would be ranked, will be decided, she added.

Meanwhile, Vice-Chancellor Prof. Alok Kumar Rai said, "This initiative will foster healthy competition among our affiliated colleges and departments, encouraging them to raise their standards in all aspects of education. Our aim is to create a transparent and merit-based system."

JAGRAN CITY PAGE III

प्रस्ताव देर से देने पर शोधार्थियों से मांगा जवाब

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने जूनियर रिसर्च फेलो (जेआरएफ) के विस्तार एवं उच्चीकरण के लिए देर से भेजे गए प्रस्ताव पर सात शोधार्थियों से तीन दिन में कारण पूछा गया है। साथ ही एक शोधार्थी का विस्तार नियमानुसार न होने से वापस कर दिया गया। संबंधित शोधार्थी ने वाह्य परीक्षक के स्थान पर सेवानिवृत्त शिक्षक से पास करा लिया जो यूजीसी के नियमानुसार गलत है। अब विभागाध्यक्ष से फिर से प्रस्ताव देने के लिए कहा है। कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी की ओर से इस संबंध में पत्र जारी किया है। हाल ही में जेआरएफ एसआरएफ कमेटी की बैठक हुई थी। इसमें समिति की ओर से लिए गए निर्णय के अनुसार मनोविज्ञान विभाग की शोधार्थी ज्योति शुक्ला, हिंदी विभाग के मनोज कुमार, सुष्मिता वर्मा, वनस्पति विज्ञान विभाग से विजय कुमार, अर्थशास्त्र से सौरभ सोनकर व अंग्रेजी विभाग से सुभांगी सोनी के संबंध में संबंधित विभाग की ओर से देर से प्रस्ताव दिया गया। इन सभी शोधार्थियों को विलंब से प्रस्ताव देने का कारण अपने शोध पर्यवेक्षक, विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष के माध्यम से कुलसचिव कार्यालय भेजने के निर्देश दिए हैं।